International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Vol. 2, Issue 10, Oct 2015 IF- 2.561 ISSN: (2394-4218)
© Associated Asia Research Foundation (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email:editor@aarf.asia, editoraarf@gmail.com

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 ओमकार चौरसिया

सह आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग,

पं0 जे0 एल0 एन0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है। न्यादर्श हेतु कुल 400 शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया है, जिनमें से 200 बी0टी0सी0 प्रशिक्षित और 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाऐं हैं। कृत्य–संतोष के मापन के लिए डॉ0 एस0 के0 सक्सेना द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के फलस्वरूप पाया गया कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक (पुरुष–महिला) अपने कार्य से विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं परन्तु इनके मध्य कृत्य–संतोष में यह अन्तर सार्थक नहीं है।

प्रस्तावना

मानव जीवन की परिस्थितियाँ निरन्तर बदलतीं रहतीं हैं। शैशव से लेकर वृद्धावस्था तक मनुष्य के सम्मुख नई–नई समस्यायें और नई–नई परिस्थितियाँ आतीं रहतीं हैं और वह अपनी बुद्धि तथा अन्य सामर्थ्यों से काम लेते हुए बराबर इन समस्याओं को सुलझाने और परिस्थितियों से निपटने की चेश्टा करता है। दूसरे शब्दो में, इस सतत प्रक्रिया का नाम ही जीवन है। यह समायोजन की प्रक्रिया है।

हम जिस स्थान में रहते है। वहाँ पर विद्यमान समस्त भौतिक–अभौतिक वस्तुओं अर्थात् अपने चारों ओर विद्यमान वातावरण से हमें (मानव को) सामंजस्य करना पडता है, इस सामंजस्य को समायोजन कहते है। समायोजन दो तरीके से हो सकता है, या तो हम वातावरण, परिवेश के अनुकूल अपने को बदले अथवा वातावरण परिवेश को अपने अनुकूल बदलें, अन्यथा हमारा जीवन संभव नहीं होगा या अत्यधिक जटिलतायें आयेंगी। उदाहरण स्वरुप गर्मी के पश्चात् जाड़ा (ठण्ड़) आने पर जिस प्रकार मौसम के अनुकूल हम अपनी वेशभूषा (कपड़ों) में परिवर्तन करते हैं यही समायोजन है। वैज्ञानिक आधुनिक युग में इस विचार धारा को अधिक बल मिला है कि कुछ हम बदलें और कुछ वातावरण को बदलने का प्रयास करें। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के समायोजन हेतु उसकी कार्य दशायों, आवश्यकताओं की पूर्ति, रुचि आदि को ध्यान में रखकर तथा शिक्षक को मानसिक रुप से कार्य विषेश हेतु प्रशिक्षित कर समायोजन कराया जा सकता है। समायोजन हो जाने से व्यावहारिक जीवन में व्यक्ति मानसिक एवं शारीरिक रुप से पूर्ण स्वस्थ रहता है। जिससे उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि के साथ ही साथ कार्य कुशलता में भी वृद्धि होती है तथा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के स्तर में भी वृद्धि हो जाती है। जिससे समाज एवं राष्ट्र दोनों के विकास को बल मिलता है।

शिक्षा के अनेक स्तर हैं – प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षा इत्यादि, किन्तु विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा का स्तर सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षा की पहली सीढ़ी है जिसे सफलता पूर्वक पार करके ही कोई व्यक्ति अपने अभिष्ट लक्ष्यों तक पहुंच सकता है। राष्ट्रीय विचार धारा एवं चरित्र निर्माण करने में जितना महत्वपूर्ण स्थान प्राथमिक शिक्षा का है उतना किसी दूसरे सामाजिक अभिकर्ता का नहीं है। प्राथमिक शिक्षा का मानव जीवन में वही महत्व है जो दृढ़ स्थायी भवन के निमार्ण में उसके आधार शिक्षा का होता है।

प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों का योगदान सर्वोपरि है। परम्परागत बी०टी०सी० (बेसिक टीचर सर्टीफिकेट) प्रशिक्षित अध्यापकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षित संस्थान' से दो वर्ष का प्रशिक्षण तथा टी०ई०टी० (टीचर इलिजिबिलीटी टेस्ट) निर्धारित है। जबकि विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ प्रशिक्षित स्नातक (बैचलर ऑफ एजुकेशन) तथा 'जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान' से 6 माह का प्रशिक्षण तथा टी०ई०टी० निर्धारित है। परम्परागत बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापक

दो वर्ष के लम्बे प्रशिक्षण अवधि के कारण प्रथमिक शिक्षा के वातावरण में स्वयं को समायोजित कर लेते है तथा प्राथमिक शिक्षा हेतु अपने आप को मानसिक रूप से तैयार कर लेते है। ऐसे अध्यापक प्रशिक्षण के दौरान मानसिक रूप से परिपक्व हो जाते हैं कि उनका शैक्षिक सहयोग प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाने में ही रहेगा। ऐसे अध्यापकों की शैक्षिक कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का उच्च स्तर होने की पूरी सम्भावनाएं होती है। परन्तु विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता स्नातक के साथ–साथ बी०एड० तथा टी०ई०टी० निर्धारित है। विशिष्ट बी०टी०सी० चयनित अध्यापक अन्य उच्च उपाधि (पी–एच०डी०, नेट) धारक होते हैं जो उच्च शिक्षण संस्थानों या समकक्ष संस्थानो में शिक्षण कार्यों के लिए योग्य होते है। इनको उच्च शिक्षण संस्थानों में शैक्षणिक कार्य हेतु आगे बढ़ने की पूर्ण सम्भावनाएं होती है परन्तु अपने शैक्षिक योग्यता के अनुसार रोजगार न मिल पाने के कारण प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु चयनित हो जाते है। ऐसे अध्यापक दिन रात प्रयास करते रहते हैं कि उनका उच्च व्यावसायिक गतिशिलता हो जाए उच्च आशाएं रखने वाले अध्यापकों का अपने व्यवसाय में कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का निम्न स्तर होने की पूरी सम्भावना होती है। शोधकर्ता के मस्तिष्क में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि योग्यता एवं प्रशिक्षण अवधि में अन्तर होने के कारण बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित दोनों प्रकार के अध्यापकों के समायोजन में क्या अन्तर होता है? इसी प्रश्नगत बातों को ध्यान में रखते हुए इस शोध समस्या को शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के रूप में चयन किया है।

समस्या कथन

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

समस्या का परिभाषीकरण

प्राथमिक विद्यालय :– यहाँ प्राथमिक विद्यालयों से तात्पर्य उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से हैं।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक :– इनसे तात्पर्य उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिऐ निर्धारित प्रशिक्षण को पूरा कर, प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से है।

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक :– इनसे तात्पर्य बी0एड0/बी0पी0एड0/एल0टी0 प्रशिक्षित व्यक्तियों को सरकारी प्रक्रिया द्वारा चयनित कर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (डायट) में 6 माह का प्रशिक्षण प्राप्त कर, प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से

समायोजन :– समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में एक सन्तुलन बनाये रखता है।' समायोजन से तात्पर्य एस0.के0. मंगल द्वारा निर्मित 'मंगल टीचर एडजस्टमेन्ट इन्वेटरी' (MTAI) के प्रशासन से प्राप्त प्राप्तांकों से है।

शोध उद्देश्य :–

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का अध्ययन करना।
2. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का अध्ययन करना।
4. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) और विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें :–

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।
2. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।
3. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।
4. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।
5. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।
6. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।
7. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

समस्या का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध केवल उत्तर प्रदेश में स्थित बुन्देलखण्ड क्षेत्र के चित्रकूट धाम कर्वी, बाँदा, हमीरपुर, महोबा, झाँसी, ललितपुर एवं जालौन जनपद के प्राथमिक विद्यालयों पर आधारित है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध 200 बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (100 पुरुष + 100 महिला) तथा 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (100 पुरुष + 100 महिला) के न्यादर्श पर आधारित है।

शोध विधि – वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत सर्वेक्षण शोध की प्रतिदर्श सर्वेक्षण के मूल्यांकन सर्वेक्षण की श्रेणी में आता है।

न्यादर्श – न्यादर्श में कुल 400 शिक्षक–शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया है, जिनमें से 200 बी0टी0सी0 प्रशिक्षित और 200 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाऐं हैं।

शोध उपकरण – कृत्य–संतोष के मापन के लिए डॉ0 एस0के0 सक्सेना द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यकीय प्रविधियाँ – एकत्रित आँकड़ों को सारणीबद्ध किया गया, तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार वर्गवार विभाजित करके उनका माध्य, मानक विचलन, ज्ञात किया गया तथा परिकल्पनाओं का सत्यापन टी–परीक्षण की सहायता से किया गया है।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

परिकल्पना – 1 ''बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक – 1

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	375.89	337.30
मानक विचलन	51.40	59.90
क्रान्तिक अनुपात	5.33	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.33 है जबकि df 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक CR के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesics) अस्वीकृत (Reject) की जाती है

और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन शिक्षिकाओं के समायोजन से अच्छा है।

परिकल्पना – 2 ''विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक–2

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक–शिक्षिकाओं कासमायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकायें
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	331.10	330.10
मानक विचलन	62.38	64.66
क्रान्तिक अनुपात	0.11	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.11 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesics) स्वीकृत (Except) की जाती है और कहा जा सकता है कि षहरी विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 3 ''बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष एवं महिला) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक–3

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षिकायें
कुल संख्या	200	200
मध्यमान	356.10	330.60
मानक विचलन	58.46	63.94
क्रान्तिक अनुपात	4.16	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 4.16 है, जबकि df 398 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.59 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का समायोजन विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों से अच्छा है।

परिकल्पना – 4 ''बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक–4

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	375.89	331.10
मानक विचलन	51.40	62.38
क्रान्तिक अनुपात	5.54	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.54 है जबकि df 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का समायोजन विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) से अच्छा है।

परिकल्पना – 5 ''बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक–5

बी0टी0सी0 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	337.30	330.11
मानक विचलन	59.90	64.66
क्रान्तिक अनुपात	0.82	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.82 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये । यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना – 6 ''बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक–6

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं का समायोजन

शिक्षक वर्ग	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	375.89	330.11
मानक विचलन	51.40	64.66
क्रान्तिक अनुपात	5.54	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 5.54 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से अधिक है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) अस्वीकृत (Reject) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष) का समायोजन विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं से अच्छा है।

परिकल्पना – 7 ''बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।''

सारणी क्रमांक–7

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन

	बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिका	विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक
कुल संख्या	100	100
मध्यमान	337.30	331.10
मानक विचलन	59.90	62.38
क्रान्तिक अनुपात	0.72	
df (200 – 2) = 198 पर सारणीमान – अ. 5% विश्वास के स्तर पर 1.97 ब. 1% विश्वास के स्तर पर 2.60		

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त C.R का मान 0.72 है जबकि d.f 198 पर टी–तालिका देखने पर पता चलता है कि 5% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 1.97 तथा 1% विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R का मान 2.60 होना चाहिये। यहाँ गणना से प्राप्त C.R का मान टी–तालिका में दिये गये दोनों स्तरों पर सार्थकता के लिए आवश्यक C.R के मानों से कम है, अतः यहाँ निराकरणीय परिकल्पना (Null-Hypothesis) स्वीकृत (Accept) की जाती है और कहा जा सकता है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षिकाओं एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के 'समायोजन' में कोई अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुऐ हैं उनका विवरण निम्नवत् है –

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 356.10 है। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का समायोजन निम्न स्तर का है।
2. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का समायोजन का माध्य 375.89 है जबकि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का समायोजन का माध्य 337.30 है। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष शिक्षकों का समायोजन सामान्य स्तर का है जबकि महिला शिक्षकों का समायोजन निम्न स्तर का है। कहने का तात्पर्य यह है कि बी0टी0सी0 प्रषिक्षण प्राप्त पुरुष शिक्षक अपने कार्य से महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित हैं और इनके मध्य समायोजन में अन्तर सार्थक भी है।
3. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 330.60 है। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) का समायोजन निम्न स्तर का है।
4. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का समायोजन का माध्य 331.10 है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का समायोजन का माध्य 330.11 है। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुरूष एवं महिला दोनों वर्ग के शिक्षकों का समायोजन निम्न स्तर का है। कहने का तात्पर्य यह है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रषिक्षण प्राप्त पुरुष एवं महिला शिक्षकों का समायोजन एक जैसा हैं तथा परिकल्पना के परीक्षण के आधार पर इनके मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
5. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 356.10 है, जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) के समायोजन का माध्य 330.60 है। टेस्ट मैनुअल के आधार पर हम कह सकते हैं कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) दोनों का समायोजन निम्न स्तर का है। हालांकिबी0टी0सी0 प्रषिक्षण प्राप्त शिक्षक (पुरुष–महिला) अपने कार्य में विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों (पुरुष–महिला) की तुलना में अधिक समायोजित हैं तथा परिकल्पना के परीक्षण के आधार परकहा जा सकता है कि इनके मध्य समायोजन में सार्थक अन्तर है।

शोध की उपादेयता :–

प्रस्तुत शोध में परिषद्‌ीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन ज्ञात किया गया है और बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन की तुलना की गयी है।

इन निष्कर्षों से उत्तर–प्रदेश सरकार द्वारा चलायी जा रही विशिष्ट बी0टी0सी0 योजना को समर्थन मिलता है। उत्तर–प्रदेश में जो व्यक्ति बी0एड0, एल0टी0, बी0पी0एड0, सी0पी0एड0, की डिग्रीयाँ लेकर शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ा रहे थे। उन सभी को उत्तर–प्रदेश सरकार द्वारा एक निश्चित प्रक्रिया अपनाकर विशिष्ट बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण देकर परिषद्‌ीय प्राथमिक विद्यालयों में रोगजार उपलब्ध कराकर एक तरफ तो शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में कमी की गयी और दूसरी तरफ प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों के अभाव की प्रतिपूर्ति भी की गयी।

चूँकि बी0एड0, एल0टी0, बी0पी0एड0, सी0पी0एड0 माध्यमिक विद्यालयों में सेवा हेतु अर्हता प्रदान करने वाली डिग्रीयाँ हैं और जब इन डिग्रीयों को प्राप्त कर अभ्यर्थी प्राथमिक विद्यालयों में सेवा के लिए तैयार होता है तो यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि क्या वह अपने इस निर्णय से संतुष्ट है? या असंतुष्ट? हालांकि इस प्रश्न के उत्तर के लिए अभ्यर्थियों के तमाम क्रिया–कलापों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए था लेकिन शोधकर्ता ने अपने शोध को अत्यधिक विस्तृत न करते हुए जिन प्रमुख चरों के मापन के आधार पर इस प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया है उनसे सरकार की इस योजना को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता प्रतीत होती है क्योंकि इस योजना से कुछ बेरोजगारों को रोजगार और उन बच्चों को शिक्षक उपलब्ध हो रहे हैं जो बच्चे सरकार द्वारा संचालित बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों से ही शिक्षा पाने के चक्कर में अपने मूल अधिकार से ही वंचित हो सकते हैं क्योंकि सरकार जिस गति से बी0टी0सी0 प्रशिक्षण दे रही है उस गति से परिषद्‌ीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की ससमय पूर्ति एक कठिन लक्ष्य है।

REFERENCES

अग्रवाल, सुभाष चन्द्र (2002). अनुसूचित जाति, पिछडी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के मध्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन : भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जनवरी से जून वर्ष –21(1)

अग्रवाल, शोभिता (2004). विज्ञान तथा कला वर्ग के उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा चिन्तन, जुलाई–सितम्बर, पेज 11–15.

कुमार, अनिल (2005). व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्राों के व्यक्तित्व, मानसिक योग्यता तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, अनपब्लिशड, पी–एच0डी0 (शिक्षा), थीसिंस, छत्रापति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

शर्मा, कुलदीप कुमार (2007), महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, अनपब्लिशड, एम0एड0 थीसिंस, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ0प्र0.